# भारतीय इतिहास

## के कुछ विषय भाग - 1

## राजा, किसान और नगर

**आरम्भिक राज्य और अर्थव्यवस्थाएँ ( लगभग 600 ई. पूर्व से 600 ई. )**

# विद्या दृष्टि

*The Vision Of Education*

CLASSES AVAILABLE :-

**6th to 10th**

- Maths
- Science
- English
- Sst

**11th & 12th**

- Pol. Science
- History
- Economics
- Accounts
- Maths
- English
- sociology

C-136A, Laxmipark, Near M. S. Memorial Public School, Nangloi, Delhi - 110041

**M H Rabbani : 8700467219**

( Chief Mentor & Coordinator )

**@vidyadrishti**

# CH-2 राजनीतिक और आर्थिक इतिहास

## कालक्रम / कालखंड

- 2600 ई० पू० - 1900 ई० पू० → **हड़प्पा सभ्यता**
- 1500 ई० पू० - 600 ई० पू० → **वैदिक सभ्यता**
- 544 ई० पू० - 412 ई० पू० → **हर्यक वंश**
- 412 ई० पू० - 344 ई० पू० → **नाग वंश**
- 346 ई०पू० - 321 ई० पू० → **नन्द वंश**
- 321/322 ई० पू० - 185 ई० पू० → **मौर्यवंश**

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

## अभिलेख

### परिभाषा

- पत्थर, धातु या मिट्टी के बर्तन जैसे कठोर सतह पर खुदे लेख, अभिलेख कहलाते हैं।

### अभिलेखों का विषय / अभिलेखों से प्राप्त विवरण

- शासकों की उपलब्धियाँ एवं कार्य
- विजय अभियान
- शासकों के विचार, नीति, नियम
- धार्मिक कार्यों के लिए दिये गये दान
- शासन - प्रशासन

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

### अभिलेख व तिथि

- अभिलेख स्थायी प्रमाण होते हैं। इन पर इनके निर्माण की तिथि भी खुदी होती है।
- जिन अभिलेखों पर तिथि नहीं होती है, उसका काल निर्धारण साधारणतया पुरालिपि अथवा लेखन शैली के आधार पर काफी सुस्पष्टता से किया जाता है।

### प्राचीनतम अभिलेख की भाषा

- प्राचीनतम अभिलेखों की भाषा प्राकृत थी जो जनसामान्य द्वारा बोली जाती थी।
- अजातशत्तु और अशोक जैसे शासकों के नाम प्राकृत भाषा में अभिलेखों में मिलते हैं।

### अभिलेख शास्त्र

- अभिलेख के अध्ययन को अभिलेखशास्त्र कहते हैं।
- अभिलेख के अध्ययनकर्ता को अभिलेखशास्त्री कहते हैं।

by- M H Rabbani

# प्राचीन भारत के अभेलेखों की भाषा एवं लिपि

👉 **प्राचीनतम अभिलेख**
- तीसरी शताब्दी ई. पू.
- प्राकृत भाषा
- ब्राह्मी लिपि

👉 तमिल, पाली और संस्कृत भाषा में भी अभिलेख प्राप्त हुए हैं।

👉 **ब्राह्मी लिपि में अभिलेख**
- मौर्य काल
- गुप्त काल
- विशेषकर असोक

👉 **असोक के शिलालेख**
- ब्राह्मी लिपि
- खरोष्ठी लिपि
- कुछ यूनानी तथा आरमाइक लिपि में भी हैं

👉 **संस्कृत में अभिलेख**
- दूसरी शताब्दी ईस्वी से प्राप्त हुए हैं
- चौथी और पाँचवी शताब्दी में इनकी संख्या में वृद्धि

👉 **प्रादेशिक भाषाओं में अभिलेख**
- 8 वीं शताब्दी के बाद ब्राह्मी लिपि में अनेक प्रादेशिक शैलियों का विकास हुआ।
- 9वीं एवं 10वीं शताब्दी में अभिलेखों में अनेक प्रादेशिक भाषाओं का प्रयोग किया गया है।

👉 **निष्कर्ष :-** वस्तुतः प्राचीन भारत के अभिलेखों में कालखंड, लिपि एवं भाषा संबंधित विविधता है।

# अभिलेखों की उपयोगिता

# भारतीयों के जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रतिबिंबित करते हैं।
# विभिन्न प्रकार के सरकारी एवं गैर सरकारी अभिलेख जानकारी के प्रमुख स्त्रोत हैं।
(1) सबसे प्राचीन अभिलेख
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ो की प्राप्त मुद्राओं से प्राप्त
- लिपि नही पढ़ी जा सकी
- अतः इतिहास की जानकारी में सहायक नहीं

(2) सरकारी अभिलेख (सबसे प्रसिद्ध असोक के अभिलेख )
# चट्टान एवं स्तम्भ पर सम्पूर्ण राज्य में बनवाये गये हैं।
# इनसे प्राप्त जानकारी
- असोक का जीवन चरित्र
- शासन प्रबंधन
- धर्म, प्रचलित भाषाएँ
- प्रजाहित के कार्य
- सम्राज्य का विस्तात

by- M H Rabbani

# असोक का सम्राज्य विस्तार
- उत्तर पश्चिम सीमा प्रान्त, काठियावाड़, मैसूर, उड़ीसा, बिहार, नेपाल से असोक के अभिलेख प्राप्त हुए हैं।
- दक्षिण भारत के कुछ राज्यों को छोड़कर समस्त भारत उसके साम्राज्य का हिस्सा था।
- असोक का साम्राज्य 5 भागों में विभाजित था।

**(3) शुंग वंश** - इनके बारे में जानकारी अभिलेखों से प्राप्त
**सातवाहन वंश**
**गुप्त वंश**

**(4) हाथिगुफा अभिलेख** - भारत के प्रतिभाशाली कलिंग नरेश खारवेल के बारे में जानकारी

**(5) नासिक अभिलेख** - सातवाहन से संबंधित

**(6) गिरनार शिलालेख** - रूद्र दमन से संबंधित

**(7) इलाहबाद स्तम्भ लेख** - हरिसेन द्वारा लिखित
समुन्द्रगुप्त के विजय एवं सफलता की जानकारी

**(8) महरौली लौह स्तम्भ** - चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के बारे में जानकारी

**(9) ग्वालियर की प्रशस्ति** - प्रतिहार शासक राजाभोज के बारे में जानकारी

**(10) एहोल अभिलेख** - दक्षिण के चालूकय शासक पुलकेसिन द्वितीय की हर्ष पर विजय की जानकारी।

**निष्कर्ष :-**

# अभिलेख इतिहास के विश्वसनीय एवं स्थायी प्रमाण हैं।

# इनमें प्राचीन भारत के विभिन्न पहलुओं की जानकारी प्राप्त होती है।

## अभिलेखों की सीमाएं /अभिलेखशस्त्रियों की समस्याएं

**(a) लिपि और भाषा को पढने में कठिनाई :**

- विभिन्न लिपियों मे पाये गये अभिलेख को पढ़ने मे कठिनाई।
- सिंधु घाटी से संबंधित अभिलेख तो अभी तक पढ़े न जा सकें हैं।
- भारत में लगभग 1500 भाषा प्रचलित है, जिनमें से संस्कृत, प्राकृत, अरमाइक और यूनानी भाषा इत्यादि में लिखे गये अभिलेख तो पढे जा सकते हैं। परंतु कई ऐसी भाषाएँ है जिनको पढ़ना एंव समझना कठीन है।

**(b) अक्षरों के लिखावट में परिवर्तन**

- एक ही अक्षर कुछ शताब्दी पहले किसी और ढंग से लिखा जाता था और कुछ शताब्दी बाद किसी और ढंग से लिखा जाने लगा।
- जैसे :- 250 ई. पू. 'अ' जबकि 500 ई. पू. 'भ' (अ)

**(c) संवत या कैलेंडर विविधता**

- अलग अलग वंशों द्वारा अलग-अलग संवतों का - प्रयोग।
- जैसे - सक संवत, विक्रमी संवत, हिजरी संवत

**(d) उपाधियों का प्रयोग**

- एक ही प्रकार की उपाधियों का प्रयोग कई शासको द्वारा।

जैसे :- देवानामपिय (देवताओं का प्रिय ) पियदस्सी (सुंदर मुखाकृति वाला) का प्रयोग कई मौर्य शासकों ने किया है।

**(e) अक्षरों का विलुप्त हो जाना :-**

- खुले चट्टानों एवं स्तंभो पर लिखें गये अभिलेख से बहुत सारे अक्षरों के विलुप्त होने के कारण पढ़ने की समस्या।

by- M H Rabbani

**(F) शासक की तारीफ**

- समान्यत: शासक अभिलेखों में बातों को बढ़ा चढ़ाकर लिखवाते थे जिससे इतिहास का सही निष्कर्ष निकाल पाना मुश्किल हो जाता है।

🔴 **निष्कर्ष :-**

👉 अभिलेखों में सिर्फ कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों या महत्त्वपूर्ण घटनाओं का विवरण होता है।

👉 जनसाधारण या उनके जीवन से संबंधित रोजमरा की घटनाओं का कोई विवरण नहीं होता

👉 अत: अभिलेखों का महत्त्व सीमित ।

## भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की जानकारी के स्त्रोत

👉 हड़प्पा सभ्यता के 1500 वर्षो के बाद के भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की जानकारी के स्त्रोत निम्नलिखित हैं :-

(a) अभिलेख
(b) सिक्के
(c) ग्रंथ
(d) चित्रकला

## भारतीय उपमहाद्वीप में विकास कार्य

👉 हड़प्पा सभ्यता के 1500 वर्षों के बाद भारतीय उपमहाद्वीप के विभिन्न भागों में निम्न प्रकार के विकास कार्य हुए : -

(a) ऋग्वेद का लेखन कार्य
(b) कृषक बस्तियों का उदय
(c) अंतिम संस्कार के नए तरीकों का विकास (महापाषाण )
(d) नए नगरों का उदय

## छठी शताब्दी ई. पू. परिवर्तनकारी काल

(a) आरम्भिक राज्यों का उदय
(b) नगरों का उदय
(c) लोहे के प्रयोग में वृद्धि
(d) सिक्कों का विकास
(e) बौद्ध एवं जैन दार्शनिक विचारधाराओं का विकास
(f) ब्राह्मणों द्वारा धर्मशास्त्रों की रचना

## मुद्राशास्त्र

- सिक्कों का अध्ययन मुद्राशास्त्र कहलाता है।
- इसके अंतगर्त सिक्कों पर पाए जाने वाले चित्र, लिपि एवं प्रयुक्त धातु का अध्ययन किया जाता है।

## सिक्के इतिहास की जानकारी में सहायक

(a) सिक्को से हमें राजाओं के नाम, कालखंड और अन्य जानकारी जानकारियाँ प्राप्त होती है।
(b) सिक्कों में प्रयुक्त धातु से उस काल की आर्थिक दशा का भी अनुमान लगाया जा सकता है।
(c) अलग अलग स्थान से प्राप्त होने वाले सिक्कों से किसी शासक विशेष के साम्राज्य विस्तार का अनुमान लगाया जा सकता है।
(d) सिक्कों से किसी कालखण्ड में व्यापारिक प्रगति एवं किसी क्षेत्र का दूरदराज के क्षेत्रों से व्यापारिक सबंध का अनुमान लगाया जा सकता है।

by- M H Rabbani

# आहत सिक्के

(a) चाँदी या ताँबे को हाँथों से खुरेद कर अथवा पीटकर बनाए गए सिक्के
(b) इन सिक्कों का प्रचलन 6ठी शताब्दी ई. पू. हुआ करता था।

# आहत सिक्कों की विशेषता

(a) इन्हें व्यापारी और राजाओं द्वारा जारी किया जाता था।
(b) ये सिक्के, चांदी और ताँबे के बने होते थे।
(c) चाँदी और ताँबे के चादर पूर प्रतीक चिन्हो को आहत कर इन सिक्कों को बनाया जाता था
(d) इनके प्रचलन से विनिमय [ लेनदेन ] असान हो गया था।
(e) मौर्य काल में आहत सिक्कों का प्रचलन था।

# सोने के सिक्कों का प्रचलन

(a) सबसे पहले **कुषाण शासको ने** प्रथम शताब्दी ई. में सोने के सिक्कों को जारी किया था
(b) बहुमूल्य वस्तुओं के व्यापार के लिए प्रयोग किया जाता था।
(c) **दक्षिण भारत में रोमन सिक्को** के प्रमाण मिलें हैं।
(d) रोमन सिक्के दक्षिण भारत व्यापारियों द्वारा रोमन साम्राज्य से व्यापार के अंतर्गत प्राप्त हुए थें।

## छठी शताब्दी ईस्वी से सोने के सिक्कों के कम मिलने के कारण

इतिहासकारों में इस संदर्भ में मतभेद है। कुछ का मानना है कि : -
(a) आर्थिक संकट पैदा हो गया इसलिए सोने के सिक्के का आभाव हो गया था।
(b) रोमन साम्राज्य के पतन के के बाद व्यापार मे कमी आई, अत: सोने के सिक्कों का आभाव।

# यौधेय - ताम्र सिक्का

- प्रथम शताब्दी ई०पू०, **पंजाब और हरियाणा।**
- यौधेय कबायली गणराज्यों द्वारा ताँबे के सिक्के जारी किये गये थे।
- इससे इनकी व्यापारिक स्ची का अनुमान लगता है।

# जेम्स प्रिंसेप

- जेम्स प्रिंसेप के द्वारा 1830 के दशक में **ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ** निकाला गया
- इससे राजा असोक के अभिलेखों एवं सिक्कों के बारे में निम्न जानकारी प्राप्त हुई :-

(a) अधिकांश अभिलेखों और सिक्कों पर पियदस्सी यानी मनोहर मुखाकृति वाला राजा का नाम अंकित है।
(b) कुछ अभिलेखों पर राजा का नाम, असोक भी अंकित है।
(c) असोक के अभिलेख मुख्यत: ब्राह्मी और खरोष्टी लिपि में लिखे हैं।

विद्या दृष्टि
by- M H Rabbani

# जेम्स प्रिंसेप के शोध का परिणाम

- इनके शोध से आरंभिक भारत के राजनीतिक इतिहास के अध्ययन को एक नयी दिशा मिली।
- इनके शोधों के परिणामस्वरूप 20 वी. सदी के आरंभिक दशकों तक भारतीय उपमहाद्वीप राजनीतिक इतिहास का एक समान्य आरेख चित्र तैयार हो गया।

# प्राचीन भारतीय राजतंत्र और गणराज्य (गण /संघ )

# 6ठी शताब्दी ईसा पूर्व शासन व्यवस्था

- राजतंत्र
- गणराज्य

| आधार | राजतंत्र | गणराज्य |
|---|---|---|
| **शासन व्यवस्था** | तानाशाही और निरंकुशता | गणराज्यों का ढांचा लोकतान्त्रिक |
| **शासक** | शासन प्रमुख राजा | शासन प्रमुख जन - प्रतिनिधि |
| **सत्ता** | सत्ता पैतृक | सत्ता जनता के द्वारा प्रदत्त |
| **राजा** | राजा भोगविलासी और स्वार्थी | जनकल्याण की भावना वाला लोकहितैषी |
| **न्याय** | राजा द्वारा स्वयं न्याय, उसकी इच्छा ही कानून | न्याय सुलभ और जनतान्त्रिक ढंग से पंचायतों के द्वारा |
| **राज्य** | मगध, कोसी, कौशल, अवन्ति, वत्स | कपिलवस्तु के साक्य, कुसीनगर के मल्ल, वैशाली, लीच्छवी |

# इतिहासकारों द्वारा समान्य लोगों के जीवन के इतिहास का निर्माण

# समान्य लोगों के जीवन का इतिहास लिखने के लिए इतिहासकार पुरातत्विक स्त्रोतों के साथ -साथ साहित्यिक स्त्रोतों का भी प्रयोग करते हैं।

by- M H Rabbani

**(a) वैदिक साहित्य**

👉 चार वेद :- 🔹 ऋग्वेद 🔹 यजुर्ववेद 🔹 अथर्ववेद 🔹 सामवेद

👉 महाकाव्य :- 🔹 रामायण 🔹 महाभारत

👉 अन्य :- 🔹 ब्राह्मण ग्रंथ 🔹 अरण्यक 🔹 उपनिषद 🔹 पुराण

🔴 इनसे आर्यों के बारे में निम्न जानकारी प्राप्त होती है :-

🔹 कृषि, पशुपालन

🔹 व्यापार

🔹 लोहार, बढ़ई, धोबी, चरमकार

**(b) बौद्ध एवं जैन साहित्य**

👉 बौद्ध ग्रंथ :- 🔹 जातक 🔹 त्रीपिटक

👉 जैन ग्रंथ :- 🔹 अंग 🔹 उपअंग

👉 जैसे :- गंदतिंदु जातक

🔴 इनसे तत्कालीन लोगों के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

**(c) संगम साहित्य**

👉 तमिल ग्रंथ

🔴 इससे निम्न जानकारी प्राप्त होती है :-

🔹 राजा, योद्धा और सामंत के बारे में

🔹 जनसधारण के जीवन के बारे में

🔹 भारत का विदेश व्यापार उन्नत स्थिति में था

🔹 मसाले के निर्यात के बदले सोना प्राप्त होता था

🔴 इसकी तुलना होमर युग के वीर गाथा काव्यों से की जाती है

**(d) विदेशी यात्रियों के वृतांत**

👉 मेगस्थनीज

👉 फाह्यान

👉 हवेनसांग

🔴 इनके यात्रा वृतांत से जनसधारण के रहन - सहन की जानकारी प्राप्त होती है।

**(e) प्राचीन भवन, स्मारक तथा कला**

👉 नगर, राजमहल, मंदिर, स्तूप, गुफा के अवशेष

👉 मूर्तिकला, चित्रकला के नमूने

👉 कला की अन्य वस्तुएँ

🔴 इनसे समकालीन लोगों के सामाजिक एवं आर्थिक जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी
प्राप्त होती है।

**(f) अतिरिक्त**

👉 अभिलेख

👉 दान संबंधित आदेश

👉 शवाधान के तरीके

🔴 ये जनसाधारण के जीवन का इतिहास निर्माण करने में इतिहासकारों को सहायता करती है।

by- M H Rabbani

# प्रारम्भिक राज्य - महाजनपद

👉 जनपद :- जन (लोग , जनजाती या कुल)
पद (पैर)

- एक ऐसा भुखंड जहाँ कोई जन अपना पाँव रखता है।

👉 छोटे - छोटे जनपदों का समूह महाजनपद

👉 6ठी शताब्दी ई. पू. मे भारत में पनपी प्रमुख प्रादेशिक इकाइयों या राज्य को बौद्ध साहित्य में महाजनपद कहा गया।

👉 **महात्मा बुद्ध के समय इनकी संख्या 16 थी जिनमें प्रमुख चार-**
a) मगध (b) कौशल (c) अवन्ति (d) वत्स

# महाजनपद की विशेषताएँ

(a) कुछ महाजनपद राजतंत्र कुछ गणराज्य।
(b) अधिकांश महाजनपदो पर एक राजा का शासन।
(c) परंतु गण या संघ में सामूहिक शासन, समूह का प्रत्येक सदस्य शासक कहलाता था।
(d) प्रत्येक महाजनपद की अपनी राजधानी होती थी जो समान्यत: किलाबंद होती थी।
(e) शासकों का प्रमुख कार्य
- किसानों, व्यापारियों, शिल्पकारों से कर एंव उपहार वसूलना
- पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण कर के संपत्ति जुटाना

(f) अधिकांश महाजनपदों के पास अपनी स्थायी सेना और नौकशाही तंत्र था।

# शक्तिशाली मगध महाजनपद

छठी से चौथी शताब्दी ई. पू. में मगध (आधुनिक बिहार) सबसे शक्तिशाली महाजनपद बनकर उभरा। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित थे :-

**(a) महत्वकांक्षी शासक**
- विविसार,अजातसत्तु,महापदमनंद जैसे महत्वकांक्षी शासकों ने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए 'साम, दाम, दंड, सभी प्रकार की नीतियों का सहारा लिया।

**(b) उपजाऊ भूमि:-**
- गंगा के आस-पास के क्षेत्र में स्थित होने के कारण मगध की भूमि बहुत उपजाऊ थी।
- अत: कृषि ने मगध की अर्थव्यवस्था को शक्तिशाली बनाने मे सहायता की।

**(c) लोहे की खदानें :-**
- लोहे की खान की उपलब्धता के कारण हथियार उद्योग तथा कृषि संबंधित ओंजार उपलब्ध होना आसान था।

**(d) सैन्य शक्ति :-**
- जंगली क्षेत्रों में हाथी की उपलब्धता के कारण मगध की सेना बहुत प्रभावशाली थी।
- सेना में हाथी, घोड़ा और रथ शामिल थे।

**(e) अनुकूल स्थान पर राजधानी**
- मगध की प्रारंभिक राजधानी राजगृह पहाड़ियों से घिरा एक किलेबंद नगर था।
- दुसरी राजधानी पाटलिपुत्र (चौथी शताब्दी ई. पू.) गंगा, गडक और सोन नदियों के संगम पर स्थित था।
- अत: आक्रमण से प्राकृतिक रूप से सरक्षित।

by- M H Rabbani

**(f)व्यापारिक मार्ग :-**

- गंगा एवं उसकी सहायक नदियों से आवागमन सस्ता एवं सुलभ था।
- इन मार्गों पर लुटमार की कोई समस्या नहीं थी जिससे व्यापारिक उन्नति हुई।

## मौर्य काल से पूर्व मगध राज्य के उत्थान में शासकों की भूमिका

## मगध राज्य और बिंबिसार

(a) महात्मा बुद्ध के समय मगध का राजा।

(b) **हरयक वंश,** 547 ई० पू० - 495 ई. पू. तक शासन।

**(c) साम्राज्य विस्तार**

- युद्ध :- अंग प्रदेश को पराजित कर मगध में मिलाया।
- मित्रतापूर्ण संबंध :- पडोसी साम्राज्य अवन्ति के राजा प्रधोत के साथ।
- वैवाहिक संबंध :- कौशल नरेश की पुत्री कोशल देवी से विवाह कर कासी दहेज में पाया। पंजाब की राजकुमारी क्षेमा से भी विवाह किया।

(d) मगध को एक शक्तिशाली राज्य के रूप में रूपांत्रित किया जिसमे 80 हजार गाँव शामिल थें।

**(e) धार्मिक विश्वास को लेकर मतभेद**

- बौद्ध धर्म
- जैन धर्म

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

**(f) मृत्यु**

- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार पुत्र अजातसत्तु ने हत्या कर दी।
- जैन ग्रन्थों के अनुसार अपने पुत्र के लिए स्वयं राज्य त्याग दिया।

## अजातसत्तु और मगध साम्राज्य

**(a) पिता की मृत्यु के बाद 495-462 ई. पू. तक 32 वर्ष शासन किया।**

**(b) कौशल विजय**

- विमविसार की मृत्यु के बाद प्रसेनजीत का कासी पर नियंत्रण।
- अजातशत्रू ने कौशल राजा प्रसेनजीत को पराजित कर कौशल प्रदेश एवं कासी वापस पा लिया।
- प्रसेनजीत को पराजित करने के बाद उसकी पुत्री से विवाह कर कासी को पुन: दहेज मे प्राप्त किया।

**(c) लिच्छवी के साथ संघर्ष**

- उसने 36 राज्यों के संघ लिच्छवी को पराजित किया।
- पराजित करने में 16 वर्ष लगे क्योंकि 36 संघों के बीच एकता थी एवं वे अच्छे लड़ाकू तथा दृढस्वभाव के थें।
- बसकारा (मंत्री ) को इन संघों में फुट डालने में 3 साल लगा।
- लिछवि पर सुगमता से आक्रमण करने के लिए अजातसत्तु ने गंगा नदी के तट पर पाटलिपुत्र नामक नगर बसाया।

by- M H Rabbani

**(d) अजातसत्तु का धर्म :-**

- मतभेद
- संभवत पहले जैन धर्म
- जीवन के अंतिम काल में बौद्ध धर्म
- महात्मा बुद्ध से मिलकर अपने पापों की क्षमा मांगता हुआ भरहुत के एक चित्र मे दिखाया गया है।

**(e) प्रमुख कार्य :-**

- बुद्ध की अस्थीयों का एक भाग प्राप्त कर उस पर स्तूप बनवाया।
- **राजगृह मे बौद्ध मत की प्रथम परिषद् का आयोजन किया।**

**(f) अजातशत्रु के उत्तराधिकारी :-**

- बौद्ध धर्मग्रंथों के अनुसार 426- से 345 ई. पू. तक मगध पर शासन किया।
- इनमें उद्दयन और शिशुनाग के अतिरिक कोई अन्य योग्य शासक नही था।

**(g) उद्दयन → राजगृह से पाटलिपुत्र राजधानी स्थानांतरण।**

**(h) शिशुनाग :-**

- शिशुनाग वंश का संस्थापक।
- प्रद्योत को पराजित कर अवन्ति को मगध में मिलाया।
- 387 ई. पू. **बौद्ध धर्म की दूसरी परिषद् का वैशाली में** आयोजन करवाया
- इसके बाद मगध में अशांति।
- इस वंश के **अंतिम शासक कालाशोक की हत्या** कर लगभग 345 ई० पू. में **महापद्मनंद नंद वंश की स्थापना** की।

## महापद्मनंद और मगध साम्राज्य

(a) **नंद वंश का संस्थापक,** नीच जाती से संबंध रखने वाला
(b) 345 से 322 या 323 ई. पू. तक इस वंश का शासून
(c) इसने उत्तर भारत के लगभग सभी क्षेत्रीय वंशों को मगध में मिला दिया। जैसे- कुरु, पाचाल, इक्ष्वाकु, साकय
(d) पंजाब, सिंघ और उत्तर पश्चिम सीमा प्रांत को छोड़कर लगभग संपूर्ण उत्तर भारत पर विजय।
(e) कलिंग प्रदेश के कुछ क्षेत्र भी नंद वंश के अधीन थें।
(f) गोदावरी के दक्षिण में स्थित कुछ नंद शासक अपने धन के कारण दुर-दूर तक प्रसिद्ध थे।

**(g) पतन :-**

- अनुचित कर लगाने से जनता मे अप्रिय हो गया।
- **चन्द्रगुप्त मौर्य ने इ वंश के अंतिम शासक धनानंद की हत्या कर मौर्य वंश की स्थापना की**

## मौर्य वंश

- 322- 298 ई. पू. — चंद्रगुप्त मौर्य (संस्थापक )
- 298 - 272 ई. पू. — बिंदुसार
- 268 - 232 ई. पू. — अशोक
- 232 - 224 ई. पू. — दशरथ
- 224 - 215 ई. पू. — सम्प्रति

by- M H Rabbani

- 215 - 202 ई. पू. — शालीशुका
- 202-195 ई. पू. — देववर्मन
- 195-187 ई.पू. — शतधनवान
- 187 – 180 ई. पू. — बृहदर्थ

⬇

पुष्यमित्र शुंग द्वारा हत्या, शुंग वंश की स्थापना

# मौर्य वंश की जानकारी के स्त्रोत

**(a) अर्थशास्त्र**
- चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधानमंत्री कोटिल्य (चाणक्य) द्वारा रचित।
- मौर्य प्रशासन बारे में जानकारी।

**(b) इण्डिका**
- यूनानी राजदूत मेगस्थनीज द्वारा निखित।
- चद्रगुप्त मौर्य के शासनकाल में आया था।

**(c) मुद्रा राक्षस**
- विशाखादत्र द्वारा रचित।
- राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति की जानकारी।
- नंद वंश अंत की जानकारी

**(d) बौद्ध साहित्य**
- दीपवंश
- महावंश

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

**(e) जैन साहित्य**
- कल्पसूत्र

**(f) अभिलेख**
- शिलाओं, गुफाओं और स्तम्भ पर खुदवाये गये अभिलेख।
- विशेषकर अशोक के बारे में जानकारी

**(g) पुरातत्विक प्रमाण**
- विशेषकर मूर्तिकला

# मौर्य कालीन प्रशासन के प्रमुख अभिलक्षण

**(1) केंद्रीय प्रशासन**

👉 प्रमुख अंग
- राजा
- मंत्री परिषद
- उच्च सरकारी अधिकारी

👉 राजा
- जनता की भलाई करने वाला
- सबसे शक्तिशाली
- नागरिक एवं सैनिक प्रशासन राजा की इक्षा अनुसार

👉 परामर्शदाता

🔹 अध्यक्ष 🔹 अमात्य 🔹 रजूक 🔹 प्रादेशिक

🔴 ये सभी धर्म महामात की देखरेख में होते थें।

**(2) प्रांतीय प्रशासन**

🔹 पाँच प्रमुख राजनीतिक या प्रशासनिक केंद्र (1+4)

(a) मध्य प्रांत ➖ राजधानी पाटलीपुत्र, राजा का नियंत्रण

(b) उत्तर पश्चिम प्रांत ➖ तक्षशिला ( पाकिस्तान)

(c) दक्षिण प्रांत ➖ सुवर्णगिरी (कर्नाटक)

(d) पूर्वी प्रांत ➖ तोसाली (ओडिसा), कलिंग युद्ध के पश्चात अस्तित्व में आयी

(e) पश्चिमी प्रांत ➖ उज्जयिनी (मध्य प्रदेश(

🔹 4 प्रांत → राजवंश से संबंध रखने वाले गवर्नर के नियंत्रण मे होते थें।

🔹 गुप्तचर विभाग

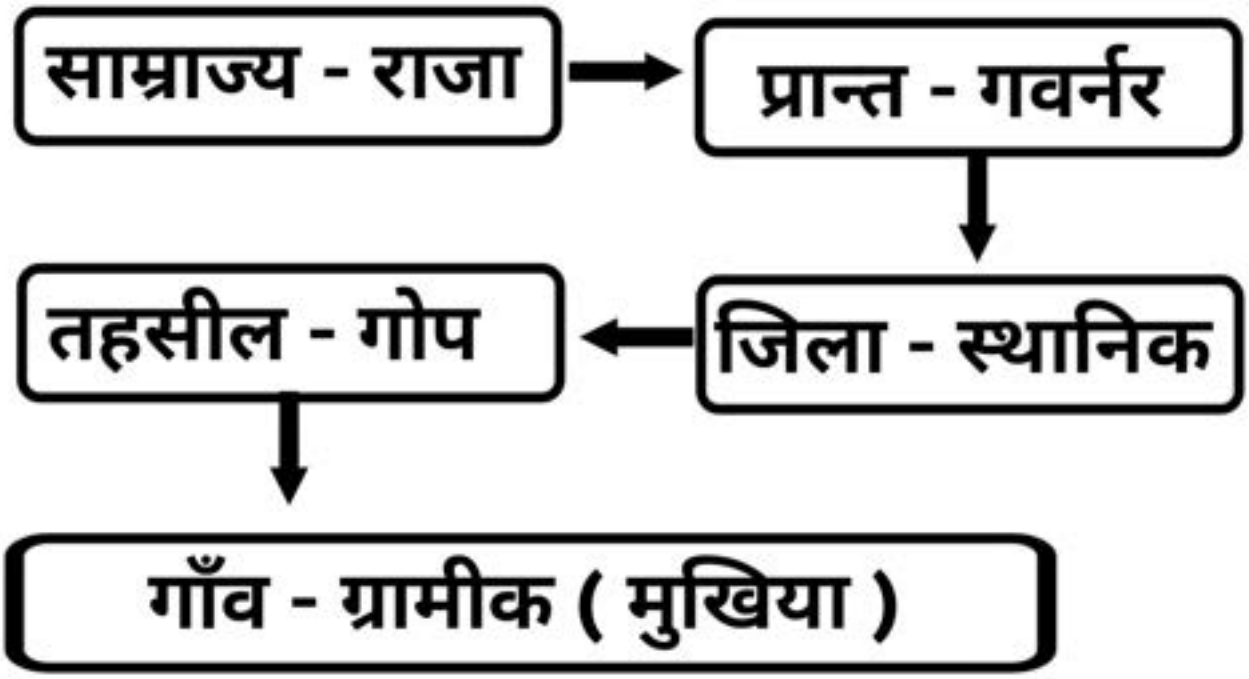




**(3) नगर प्रबंधन :-**

🔹 मेगस्थनीज की इंडिका से विशेषकर **पाटलीपुत्र** बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

🔹 इसके लिए कई समीतियाँ थी ➖

(i) प्रथम समीति → कला कौशल की देखभाल करना

(ii) दूसरी समीति → विदेशियों की देखभाल करना

(iii) तीसरी समीति → जन्म मरण का हिसाब रखन

(iv) चौथी समीति → व्यापार का, प्रबंधन करना

(v) पाँचवी समीति → शिल्पाल्यों में बनी वस्तुओं की देखभाल करना

**(4) न्याय प्रबंधन**

स्थानीय न्यायालय 🔹 गाँव ➖ ग्राम पंचायत

🔹 नगर ➖ नगर कचहरी

⬇

प्रांतीय न्यायालय 🔹 स्थानीय न्यायलय के विरुद्ध अपील की सुनवाई

⬇

केंद्रीय न्यायलय 🔹 पटना, प्रांतीय न्यायलयों के विरुद्ध अपील की सुनवाई

by- M H Rabbani

👉 दंड व्यवस्था
- जुर्माना, कोड़े लगाना
- हाँथ पैर कात देना
- प्राण दंड

👉 न्यायिक व्यवस्था इतनी अच्छी की चोरी एवं अन्य अपराध कम हुआ करते थें।

**(5) सैन्य प्रबंधन**

👉मेगस्थनीज के अनुसार एक विशाल सेना
- 6 लाख पैदल सेना
- 30 हजार घुड़सवार
- 9 हजार हाथी
- 8 हजार रथ

👉 समस्त सेना को नकद वेतन दिया जाता था।

👉 सेना के लिए 1 समीति को 6 उपसमिति मे बाहाँ गया था :-

(i) पहली → नौ सेना का संचालन
(ii) दूसरी → यातायात एवं खान-पान का देखरेख
(iii) तीसरी → पैदल सैनिको का संचालन
(iv) चौथी → अश्वरोही सैनिक
(v) पाँचवी → रथारोही सैनिक
(vi) छठी → हाथियो के सेना संचालन

**(6)आय एवं व्यय प्रबंधन**

👉 **आय के स्त्रोत**
- भूमि कर 1/4 - 1/6
- खान एवं वन कर
- सीमा शुल्क
- जलयान पर कर
- जुर्माना

👉 **व्यय के क्षेत्र**
- राजा और दरबार
- सेना एवं अधिकारियों का वेतन
- अस्पताल एवं सड़क निर्माण
- दान
- सिंचाई के साधनों का विकास
- सराय

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

**(7) अन्य उपसमितियाँ**
- सैनिकों के लिए भोजन की व्यवस्था
- जानवरों के लिए चारे की व्यवस्था
- सैनिकों की देखभाल के सेवकों की नियुक्ति
- उपकरण को ढोने के लिए बैलगाड़ी का प्रबंधना

by- M H Rabbani

# असोक का धम्म

👉 दुनिया के सभी धर्मों का सार

👉 असोक ने अपनी प्रजा की भलाई के लिए कुछ नैतिक सिद्धांतों का प्रसार किया :-

(1) बड़ो का आदर एवं आज्ञा पालन
(2) छोटो के साथ उचित व्यवहार
(3) धार्मिक सहिष्णुता या सहनशीलता
(4) मन, वचन तथा कर्म से अहिंसा
(5) पाप मुक्त शुद्ध जीवन
(6) हर परिस्थिति मे सत्य बोलना
(7) दान
- निर्धनों को धन का
- अशिक्षितों को विध्या का
- भूल भटके को धर्म का

(8) सच्चे रिति रिवाज
(9) आत्म परिक्षण
(10) अच्छे कर्म से परलोक (मोक्ष )

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

## असोक द्वारा धम्म को फैलाने के उपाय या कार्य

(a) स्वयं उन्हें धारण किया और अपने आप को एक आदर्श के रूप मे प्रस्तुत किया।
(b) धम्म के सिद्धांतों को शिलाओं, स्तंभो पर लिखवाकर मुख्य मार्ग पर लगवाया।
(c) प्रजा में नैतिकता को बढ़ावा देने एवं धम्म का प्रचार प्रसार करने के लिए धर्म महामात नामक अधिकारी नियुक्त किर्ये।
(d) सिद्धांतो के प्रचार प्रसार के लिए स्वयं धार्मिक यात्राएँ की।
(e) अपनी संपूर्ण राजसी शक्ति लगा दी। साम्राज्य के सभी अधिकारियों को धम्म का प्रचार प्रसार करने का आदेश दिया।

🔴 निष्कर्ष :-
- वस्तुत: चाहे अशोक का व्यक्तिगत धर्म बौध था लेकिन उसकी महानता इस बात में थी कि उसने अपना व्यक्तिगत धर्म प्रजा पर नही थोपा।
- यही कारण था कि धम्म के सिद्धांतों को बौध धर्म वालों के साथ-साथ हिंदू, जैन एवं अन्य धर्म के लोगों ने भी अपनाया।

## असोक के अभिलेख की भाषा एवं लिपि

👉 **भाषा**
- प्राकृत ➖ अधिकांश
- अरामेइक ] पश्चिमोत्तर
- यूनानी

👉 **लिपि**
- ब्राह्मी ➖ प्राकृत भाषा
- खरोष्ठी
- अरामेइक
- यूनानी

by- M H Rabbani

# मौर्य साम्राज्य का महत्व

👉 19वीं सदी में भारत का आरंभिक इतिहास लिखनेवाले इतिहासकारो ने मौर्य साम्राज्य को भारतीय इतिहास का प्रमुख काल माना।

👉 चंद्रगुप्त मौर्य अखंड भारत का संस्थापक

👉 मौर्य साम्राज्य का प्रसार

- ब्लूचिस्तान
- अफ़ग़ानिस्तान
- **भारत**

👉 **अखंड** भारत

- India, Pakistan, Bangladesh
- Nepal, Bhuttan, Tibbet
- Srilanka, Mayanmar
- Afghanistan

👉 विशिष्ट मूर्तिकला

👉 एक महान सम्राट अशोक जो राष्ट्रवादीयों के लिए प्रेरणास्त्रोत रहा।

# मौर्य साम्राज्य के महत्व को कम करने वाले तथ्य

(a) मात्र 150 वर्षों तक चला

(b) भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में एक लंबा काल नहीं माना जा सकता।

(c) भारतीय उपमहाद्वीप के सभी इलाकों में प्रसार नहीं था।

(d) साम्राज्य की सीमा के भीतर भी एकसमान नियंत्रण नहीं था।

(e) दुसरी शताब्दी ई० पू० आते-आते उपमहाद्वीप के हिस्सों में नए - 2 राजा और रजवाड़ो का उदय होने लगा।

# उत्तर मौर्य काल 185 ई. पू. - 600 ई.

(1) उत्तर भारत - कुषाण एवं गुप्त साम्राज्य

(2) पश्चिमोत्तर और पश्चिम भारत - शक (मध्य एशिया मूल के

(3) दक्षिण भारत - चेर, चोल और पांडव

(4) मध्य और पश्चिम भारत - सातवाहन

# दक्षिण भारत में सरदारियों का उदय

👉 **प्रमुख सरदारियां**

- दक्कन + तमिलकम इलाकों में चोल, चेर तथा पाण्ड्य जैसी सरदारियों का उदय हुआ।
- तमिलकम = तमिलनाडु + आंध्रप्रदेश + केरल

👉 **सरदार**

- सरकार का पद वंशानुगत हो भी सकता था और नही भी
- समान्यत: अपनी कोई स्थायी सेना नहीं होती थी
- अपने अधीन लोगों से भेंट लेते थे।
- अपने समर्थकों के बीच उस भेंट का बंटवारा करते थे।

👉 **जानकारी के स्त्रोत**

- तमिल संग्राम ग्रंथ

by- M H Rabbani

👉 ये क्षेत्र काफी समृद्ध थें ल

👉 **चोल शासक**

- मंदिर निर्माण के लिए प्रसिद्ध
- मंदिर स्थापत्य की द्रविड़ शैली का विकास
- प्रमुख राजा - राजा राज और राजेंद्र चोल

👉 **सरदार के कार्य :-**

- लड़ाई, झगड़े या विवाद को सुलझाना
- युद्ध का नेतृत्व करना
- अनुष्ठान का संचालन करना

## उत्तर मौर्य काल में विकसित राजत्व का विचार

👉 उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिए राजाओं ने अपने आप को देवी -देवताओं का संबंधी बताना शुरू कर दिया।

👉 **राजाओं ने स्वयं को देवता के रूप में स्थापित करने के लिए निम्न तरीके अपनाये :-**

(a) जनता की भलाई का काम करते थे ताकि प्रजा इनके कामों से खुश होकर इनकी मूर्तियो मंदिर में स्थापित कर देवताओं के समान पुजा करना शुरू कर दें।

(b) इन्होनें राज्य को छोटे - छोटे सरदारों में बाँट दिया ताकि ये सरदार प्रजा के सामने राजा का वैसा ही भव्य स्वागत करें जैसा धार्मिक पर्व पर देवी - देवताओं का किया जाता हैं।

(c) ब्राह्मणों को भूमि अनुदान में दिया ताकि वे प्रजा के बीच राजा का गुणगान करे और उसे देवता तुल्य बतायें।

(d) राजा कृषि और व्यापार में विकास के लिए प्रोत्साहन देता था ताकि देश संपदा से भर जाए और लोग राजा का गुणगान करते - करते थककर स्वयं ही उसे देवी देवता मानने लगें।

(e) स्वयं को देवी - देवता " तुल्य बताते हुए प्रशस्तियाँ लिखवाई।

(f) कुछ राजाओं ने सोना, चाँदी का सिक्का चलाकर अपना वैभव बढ़ाने का प्रयास किया

# इस प्रकार इन राजाओं ने राजत्व का एक नया विचार प्रस्तुत किया जिसमें स्वयं को देव तुल्य बताने का प्रयास किया

### उदाहरण

**(a) कुषाण शासक**

- उत्तर प्रदेश, मथुरा के पास भाट देव स्थान में देवताओं के साथ अपनी मूर्तियां बनवा दी।
- अपने नाम के साथ देवपुत्र जोड़ा

**(b) गुप्त शासक**

- हरिसेन द्वारा इलाहाबाद प्रशस्ति में समुन्द्रगुप्त को देवता के रूप में दिखाया गया है।
- समुन्द्रगुप्त की तुलना — धन देवता (कुबेर ), समुन्द्र देव (वरुण ), वर्षा देवता (इंद्र ), मृत्यु देवता (यम)

**(c) चोल शासक**

- चोल शासक बड़े लोकप्रिय थें, मंदिरों में इनकी मूर्तियां लगाकर देवी - देवताओं की तरह पूजा की जाती थी।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
by- M H Rabbani

## दनात्मक अभिलेख

- प्रथम शताब्दी ई० से भूमिदान के साक्ष्य मिले हैं।
- भूदान से संबंधित अभिलेख दनात्मक अभिलेख कहलाते हैं।
- इनमें धार्मिक संस्थाओं एवं ब्राह्मणों को दिये दान का विवरण।
- दान लेने वाले व्यक्ति के पास साक्ष्य के रूप में ताम्र पत्र जिनपर उनके नाम के साथ-साथ व्यवसाय भी लिखा होता था
- अधिकांश अभिलेख संस्कृत भाषा के हैं। 7वीं शताब्दी के बाद के अभिलेख तमिल और तेलगु में भी है।

## अग्रहार

- ब्राह्मणों को दान मे दिये गये भुभाग को अग्रहार कहा जाता था।
- ब्राह्मणों से किसी भी प्रकार का कर नहीं लिया जाता था।
- उनके पास स्थानीय लोगों से कर वसूलने अधिकार प्राप्त था।

## गहपति

- घर का मुखिया
- महिलाओं, बच्चों और दासों पर इसका नियंत्रण होता था।
- घर से संबंधित भूमि, जानवर एवं अन्य वस्तुओं का मालिक होता था।
- कभी - कभी गहपति शब्द का प्रयोग नगरों में रहने वाले संभ्रात एवं व्यापारी वर्ग के लिए भी होता था।

## श्रेणी

- उत्पादकों एवं व्यापारियों का संघ
- कच्चे माल को खरीद कर उनसे वस्तुओं का निर्माण कर बाजार में बेचने का काम

## जनता में राजा की छवी 600 ई. पू. - 600 ई.

👉 प्रजा का राजा के बारे में विचारों से संबंधित कोई खास प्रमाण नहीं मिले हैं।

👉 जातक और पंचतंत्र जैसी कहानियों के आधार पर इतिहासकारों ने पता लगाने का प्रयास किया है।

👉 जातक कथा

- प्रथम शताब्दी ई.
- पाली भाषा में, बौद्ध धर्म से संबंधित
- गंदतिंदु जातक से पता चलता है कि शासक और प्रजा के बीच संबंध तनावपूर्ण रहता था।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
by- M H Rabbani

# उपज बढ़ाने के तरीके 600 ई. पू. - 600 ई.

**उपज बढाने के लिए कृषि के तौर तरीको मे निम् परिवर्तन हुए :-**

(a) गंगा एवं कावेरी के वर्षा वाले क्षेत्रों में लोहे के फाल वाले हल का प्रयोग।

(b) गंगा घाटी मे धान की रोपाई के. कारण उपज मे वृद्धि।

(c) पूर्वोतर और मध्य पहाडी इलाकों मे कुदाल का प्रयोग।

(d) कुएँ, तालाबों, जलाशयों एंव नहरों के जरिए सिंचाई।

# ग्रामीण समाज में विभिन्नताएँ

**(1) कृषि के क्षेत्रों में नए तौर तरीकों** को अपनाने से उपज में वृद्धि हुई लेकिन इसका लाभ समाज

में सबको एक समान नहीं मिला।

**(2) बौद्ध कथाओं से जानकारी**

👉 कृषकों का वर्ग मौजूद

- भूमिहिन खेतीहर श्रमिक
- छोटे किसान
- बड़े - बड़े जमींदार

👉 पाली भाषा में गहपति शब्द का प्रयोग छोटे कृषकों तथा जमीनदारों के लिए किया गया है।

👉 किसान बड़े - बड़े जमींदार और गाँव के प्रधान के अधीन होते थें।

👉 ग्राम प्रधान का पद वंशानुगत होता था।

**(3) तमिल संगम साहित्य से जानकारी**

👉 बड़े जमींदार - वेल्लार

👉 छोटे किसान - उल्वर

👉 दस - अनिमई

**(4) समुदायों में असमानता का आधार**

👉 भूमि का स्वामित्व

👉 परिश्रम

👉 नई प्रोद्योगिकी का प्रयोग

# नए नगरों का विकास

👉 अधिकांश नगर महाजनपदों की राजधानी।

👉 समान्यतः नगर संचार मार्ग के किनारे।

👉 प्रमुख नगर

- पाटलिपुत्र - नदी के किनारे
- उज्जैनी - भूतल मार्ग के किनारे
- पुहार - समुन्द्र तट के किनारे
- मथुरा - व्यापारिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक गतिविधियों का केंद्र

👉 शासक वर्ग किलेबंद नगरों में रहते थें।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by- M H Rabbani

# नगरों से प्राप्त पुरा अवशेष

**(a) उत्तरी कृष्ण मार्जित पात्र**

- मिट्टी से बनी कटोरी और थाली
- इनपर चमकदार कलई चढी हुई है
- संभवत: अमीर लोगों द्वारा प्रयोग किया जाता था।

**(b) आभूषण**

- सोना, चाँदी, ताँबा, काँसा, शीशा
- हाथी-दाँत

**(c) उपकरण, हथियार, वर्तन, सीपियाँ**

**(d) दानात्मक अभिलेख**

# गुप्त वंश

👉 **संस्थापक** - श्री गुप्त,275 ई.

👉 **वास्तविक संस्थापक** - चन्द्रगुप्त प्रथम,320 ई. से 335 ई.

👉 **राजकीय भाषा** - संस्कृत

## जानकारी के स्त्रोत

**(1) साहित्यिक स्त्रोत**

**(2) अभिलेख**

- इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख
- ऐरन अभिलेख
- महरौली लौह स्तंभ
- उदयगिरी गुफा अभिलेख

(3) सिक्के

- अधिकतर सोने के सिक्के
- गुप्त शासकों के नाम और उपलब्धियाँ
- कला और आर्थिक व्य अवस्था का संकेत।

**(4) प्रशस्ति**

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

श्री गुप्त — घटोत्कच — चन्द्रगुप्त 1 — समुन्द्रगुप्त

|

स्कण्दगुप्त — कुमारगुप्त — चन्द्रगुप्त 2( विक्रमादित्य )

|

विष्णुगुप्त

by- M H Rabbani

# गुप्त काल प्राचीन भारत का स्वर्णयुग

**(1) सामाजिक क्षेत्र में उन्नती**

- एक आदर्श समाज
- समाज के सभी लोगों के बीच सदभाव
- ब्राह्मण और बौध भी एक साथ शांतीपूर्ण ढंग रहते थे।

**(2) राजनीतिक क्षेत्र में उन्नती**

- शकों को पराजित कर राष्ट्रीय साम्राज्य की स्थापन
- कल्याणकारी राज्य

**(3) आर्थिक क्षेत्र में उन्नती**

- व्यापार, एवं वाणिज्य में वृद्धि
- चारो ओर धन संपदा

**(4) सांस्कृतिक क्षेत्र में उन्नती**

- ललित कला, मूर्ति कला, स्थापत्य कला का विकास
- अजनता का भित्ति चित्र
- झाँसी के निकट देवगढ़ के पत्थर का मंदिर
- कानपूर में भीतरी गाँव ईट का मंदिर

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

**(5) विज्ञान के क्षेत्र में उन्नति**

👉 ज्योतिष और गणितज्ञ
- वराहमीहीर
- आर्यभट्ट

👉 प्रसिद्ध वैध
- चरक
- धन्वंतरि
- ब्रह्मगुप्त

👉 महरौली लौह स्तम्भ से धातुक्रम में उन्नति का पता चलता है।

**(6) साहित्य में उन्नती**

👉 कवि
- कालिदास, विशाखादत
- हरिसेन, अमरसिंह

👉 संस्कृत भाषा को समृद्ध किया

👉 पंचतंत्र नामक कथाएँ लिखी गई .

**(7) शिक्षा के क्षेत्र में उन्नती**

- तक्षशीला, सारनाथ और नालंदा विश्वविद्यालय में पूरी दुनिया से छात्र शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थें।

**(8) लोगों का आदर्श जीवन**

- लोग प्राय: शाकाहारी होते थे तथा मदिरा पान नही करते थे।
- चोर, डाँकू नहीं, लोग अपने घरों मे ताला नही लगाते थे।

🔴 निष्कर्ष :- उपरोक्त क्षेत्रों में प्रगति के कारण ही इसे प्राचीन भारत का स्वर्णयुग कहा जाता है।

by- M H Rabbani

# प्रशस्ति

# कवियों द्वारा अपने राजा या मालिक की प्रशंसा में लिखी गई कविताओं या लेखों को प्रशस्ति कहते हैं।

**# इतिहास की जानकारी के लिए एक बेहतर स्त्रोत नहीं है क्योंकि :-**

(a) यह एक तथ्यात्मक विवरण न होकर काव्यात्मक ग्रंथ है

(b) राजा या मालिक की बढ़ा-चढ़ा कर प्रशंसा की गई होती है। जैसे :- प्रयाग प्रशस्ति

# मौर्यकाल का सबसे प्रसिद्ध स्तम्भ

- **सारनाथ**
- इसके मस्तिष्क पर चार शेर पीठ से पीठ जुड़े दिखाए गए हैं।
- सारनाथ स्तंभ के मस्तिष्क पर बने शेरों के इस चिंह को भारत सरकार ने राष्ट्रीय चिंह के रूप मे स्वीकार किया है।
- यह शांति, संयम, शौर्य तथा प्राक्रम को संकेतित करता है।

# भारतीय उपमहाद्वीप का व्यापार

**(1) व्यापारिक मार्ग**

- स्थल मार्ग - मध्य एशिया एवं उससे आगे का व्यापार
- जलमार्ग

## अरब सागर

- उत्तरी अफ्रीका
- पश्चिम एशिया
- यूरोप

## बंगाल की खाड़ी

- चीन
- दक्षिण पूर्व एशिया

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

👉 व्यापारिक मार्गों पर राजा का नियंत्रण होता था।

👉 राजा सुरक्षा के बदले व्यापारियों से कर लेता था।

👉 समुन्द्र मार्ग से यात्रा एवं व्यापार लाभदायक लेकिन खतरनाक था।

**(2) व्यवसायी वर्ग**

- फेरी लगाने वाले
- बैलगाड़ी तथा घोड़े - खच्चरों जैसे पशुओं के साथ समूह में चलने वाले व्यवसायी

**(3) व्यापारिक वस्तुएँ**

- नमक,कपड़ा अनाज
- पत्थर, लकड़ी, जड़ी - बूटी
- धातु एवं उससे बने उत्पाद

by- M H Rabbani

👉 **रोमन साम्राज्य में काली मिर्च, मसाला, वस्त्र और जड़ी - बूटीयों की बहुत माँग थी।**

**(4) सफल व्यवसायी**

- मसत्थुवन - तमिल भाषा
- सत्यवाह - प्राकृत भाषा
- सेट्ठी

] सम्पन्न

👉 **व्यापार के लिए समान्यतः चाँदी तथा ताँबे के आहत सिक्कों का प्रयोग किया जाता था**

# सुदर्शन झील

👉 सौराष्ट्र गिरनार से निकलने वाली **सुवर्णरिखा नदी पर कृत्रिम झील।**

👉 चंद्रगुप्त मौर्य के प्रांतीय शासक **पुष्यगुप्त द्वारा निर्मित।**

👉 **रुद्रदमन का जुनागढ़ अभिलेख :-**

- 150ई.
- मध्य एशियाई मूल के शक शासक रुद्रदमन की उपलब्धियाँ।
- तूफान के कारण इस झील का तटबंध टूट गया।
- रूद्रदमन ने इस झील की मरम्मत अपने खर्च से की ओर इसके लिए जनता से कर भी नहीं लिया।

👉 **स्कंदगुप्त का जूनागढ़ अभिलेख :-**

- 467 ई.
- अत्यधिक वर्षा के कारण पुन: तटबंध टूट गया।
- सौराष्ट्र के प्रांतीय शासक पर्णदत के चक्रपालित ने मरम्मत करवाई।

# मनुस्मृति

👉 विधि ग्रंथ

👉 संस्कृत भाषा

👉 दुसरी शताब्दी ई. पू. से दुसरी शताब्दी ई. के बीच

👉 इस ग्रंथ के अनुसार राजा को सीमा विवाद को समाप्त करने के लिए ऐसे तत्व मिट्टी में गाड़ना चाहिए जो नष्ट न हो।

# हर्षवर्धन

👉 **वर्धन वंश, कन्नौज**

👉 606 ई0 से 647 ई. तक शासन

👉 16 वर्ष की आयु में थानेसवर के सिहांसन पर बैठा और अपने साहस एवं योग्यता के दम पर उत्तर भारत मे एक महान साम्राज्य की स्थापना की।

👉 **हिंदू काल का अकबर**

👉 धर्म

- बौद्ध धर्म
- सभी धर्मो का आदर

by- M H Rabbani

👉 **उत्तर भारत**

- **पंजाब, कनौज**
- **बंगाल, बिहार, उड़ीसा**

] जीतकर एक साम्राज्य की स्थापना की

👉 चालुक्य शासक पुलकेशीन द्वितीय से पराजित।

- **हर्षचरित**
  - राजकवि बाणभट्ट द्वारा रचि
  - लगभग सातवीं शताब्दी ई.
  - हर्षवर्धन की जीवनी
- **हर्षवर्धन द्वारा लिखित नाटक**
  - रत्नावली
  - नागानंद
  - प्रियवर्शिका

# प्रभावती गुप्त

- चन्द्रगुप्त द्वितीय की बेटी
- विवाह दक्कन पठार के वाकाटक परिवार में हुआ था।
- प्रभावती जमीन की मालिक थी और उसने दान भी किया है।
- संस्कृत धर्मशास्त्रों के अनुसार, महिलाओं का जमीन जैसी संपदा पर स्वतंत्र अधिकार नही था।
- **अत: धर्मशास्त्रों का सर्वत्र पालन नहीं होता था।**

# पाटलिपुत्र

👉 **अजातशत्रु द्वारा 498 ई. पू. में बसाया गया।**

👉 पहले यह गंगा नदी के किनारे एक पाटलीग्राम गाव के रूप मे था।

👉 पाँचवी शताब्दी ई. पू. मे मगध शासकों ने अपनी राजधानी राजगाह से हटाकर यहाँ बनायी।

👉 राजधानी

- हर्यक वंश
- शिशु नग
- नद वंश
- मौर्य साम्राज्य
- गुप्त साम्राज्य
- पाल साम्राज्य,

👉 मेगस्थनीज के अनुसार मौर्य काल में दुनिया बड़े शहरों में से एक।

👉 जब चीनी यात्री शवैन त्सांग (हवेन सांग) सातवी शताब्दी ई. में यहाँ आया तो यह नगर एक खण्डहर था,आबादी भी कम थी।

👉 शेरशाह सुरी (1538-1545 ) ने इसे पुनः शक्तिशाली बनाया और इसका नाम पटना कर दिया।

# कलिंग युद्ध

- 261 ई० पू०
- मौर्य शासक अशोक और कलिंग शासक महापदमनाभा के बीच
- कलिंग ( उड़ीसा + उत्तरी आंध्रप्रदेश)
- असोक की 'विजय
- बहुत बड़े स्तर पर लोग मारे गयें।
- असोक का ह्रदय परिवर्तन ➖ धम्म का सिद्धांत।

by- M H Rabbani

# ईसा पूर्व प्रथम सहस्त्राब्दि का काल

ईसा पूर्व प्रथम सहस्राब्दि का काल विश्व इतिहास में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ माना जाता है। इसके कारण निम्नलिखित हैं :-

(i) इस काल में ईरान में जरथुस्त्र जैसे चिंतक, चीन में खुगत्सी, यूनान में सुकरात, प्लेटो, अरस्तु और भारत में महावीर, बुद्ध और अन्य चिंतकों का उद्भव हुआ। उन्होंने जीवन के रहस्यों को समझने का प्रयास किया।

(ii) महावीर और बुद्ध जैसे शिक्षकों ने वेदों के प्रभुत्व पर प्रश्न उठाए। उन्होंने यह भी माना कि जीवन के दुखों से मुक्ति का प्रयास हर व्यक्ति स्वयं कर सकता है। यह समझ ब्राह्मणवाद से भिन्न थी क्योंकि ब्राह्मणवाद के अनुसार किसी व्यक्ति का अस्तित्व उसकी जाति और लिंग से निर्धारित होता था।

(iii) यही वह समय था जब गंगा घाटी में नए राज्य और शहर उभर रहे थे और सामाजिक एवं आर्थिक जीवन में कई तरह के बदलाव आ रहे थे। इनमें सबसे प्रमुख आरंभिक राज्यों, साम्राज्यों और रजवाड़ों का विकास है। छठीं से चौथी शताब्दी ई. पूर्व में मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया। इसके पीछे कारण खेती में उन्नति और लोहे की खदानें होना था।

(iv) कृषि में उन्नति हुई और नए नगरों का उदय हुआ। खेती की नई तकनीकों का विकास हुआ।

(v) इसी समय भारत में मौर्य साम्राज्य की स्थापना हुई। उपमहाद्वीप के दक्कन और उससे दक्षिण के क्षेत्र में स्थित तमिलकम में चोल, चेर और पाण्ड्य जैसी सरदारियों का उदय हुआ। ये राज्य बहुत ही समृद्ध और स्थायी सिद्ध हुए।

(vi) इस समय में राजाओं के लिए उच्च स्थिति प्राप्ति का एक साधन विभिन्न देवी-देवताओं से जुड़ना था। इसका सबसे अच्छा उदाहरण कुषाण शासक कनिष्क था। चौथी शताब्दी ई. में गुप्त साम्राज्य की स्थापना हुई।

**प्रश्न . भूमिदान करने का उद्देश्य क्या होता था ? दो विचार बताएँ ।**

उत्तर- (1) भूमिदान शासक वंश द्वारा कृषि को नए क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने की नीति ।

(ii) भूमिदान से दुर्बल होते राजनीतिक प्रभुत्व का संकेत होना और भूमिदान से समर्थन जुटाने का प्रयत्न करना ।

**प्रश्न. भूमिदान प्रचलन (600 ई.पू. से 600 ई. तक) से हमें क्या पता चलता है और किस वर्ग के लोगों पर अधिकारियों का नियन्त्रण नहीं होता था ?**

उत्तर- (क) भूमिदान प्रचलन से राज्य तथा किसानों के बीच संबंध की झाँकी मिलती है।

(ख) पशुपालन, संग्राहक, शिकारी, मछुआरे, शिल्पकार (घुमक्कड़ तथा लगभग एक ही स्थान पर रहने वाले) और जगह-जगह घूम कर खेती करने वाले लोगों पर अधिकारियों का नियंत्रण नहीं था।

विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by- M H Rabbani

# भूमिदान

**(i) स्रोत**

- भूमिदान की जानकारी अभिलेखों और ताम्रपत्रों से प्राप्त होती है।
- ताम्रपत्र सम्भवतः उन लोगों को दिए जाते थे जिन्हें दान दिया जाता था।

**(ii) उद्देश्य -**

- भूमिदान धार्मिक संस्थाओं अथवा ब्राह्मणों को दिए जाते थे।
- भूमिदान कृषि को नए क्षेत्रों में प्रोत्साहित करने के लिए भी दिया जाता था।
- कभी-कभी राजा अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के लिए अपने समर्थकों की संख्या में वृद्धि करने के लिए भी भूमिदान करता था।
- राजा अपने आपको उत्कृष्ट मानव सिद्ध करने के लिए भी भूमिदान करता था।

**(iii) भाषा-**

- भूमिदान से सम्बन्धित अभिलेख संस्कृत, तमिल और तेलुगु में प्राप्त होते हैं।

**(iv) महत्त्व -**

- भूमिदान से राज्य और किसानों के मध्य सम्बन्धों की जानकारी होती है।
- भूमिदान के पश्चात् लोगों को नए प्रधान (मालिक) की आज्ञाओं का पालन करना पड़ता था

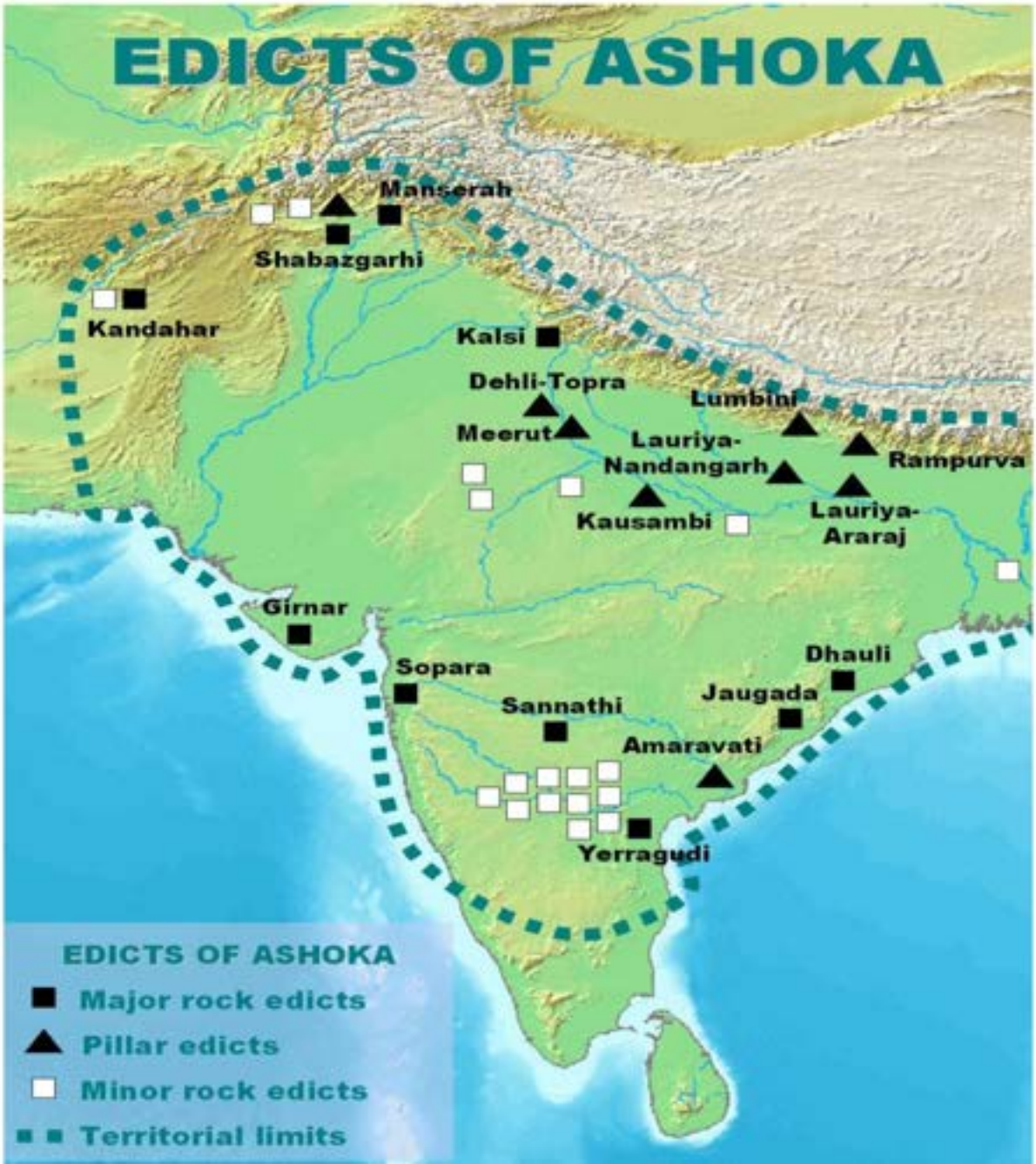

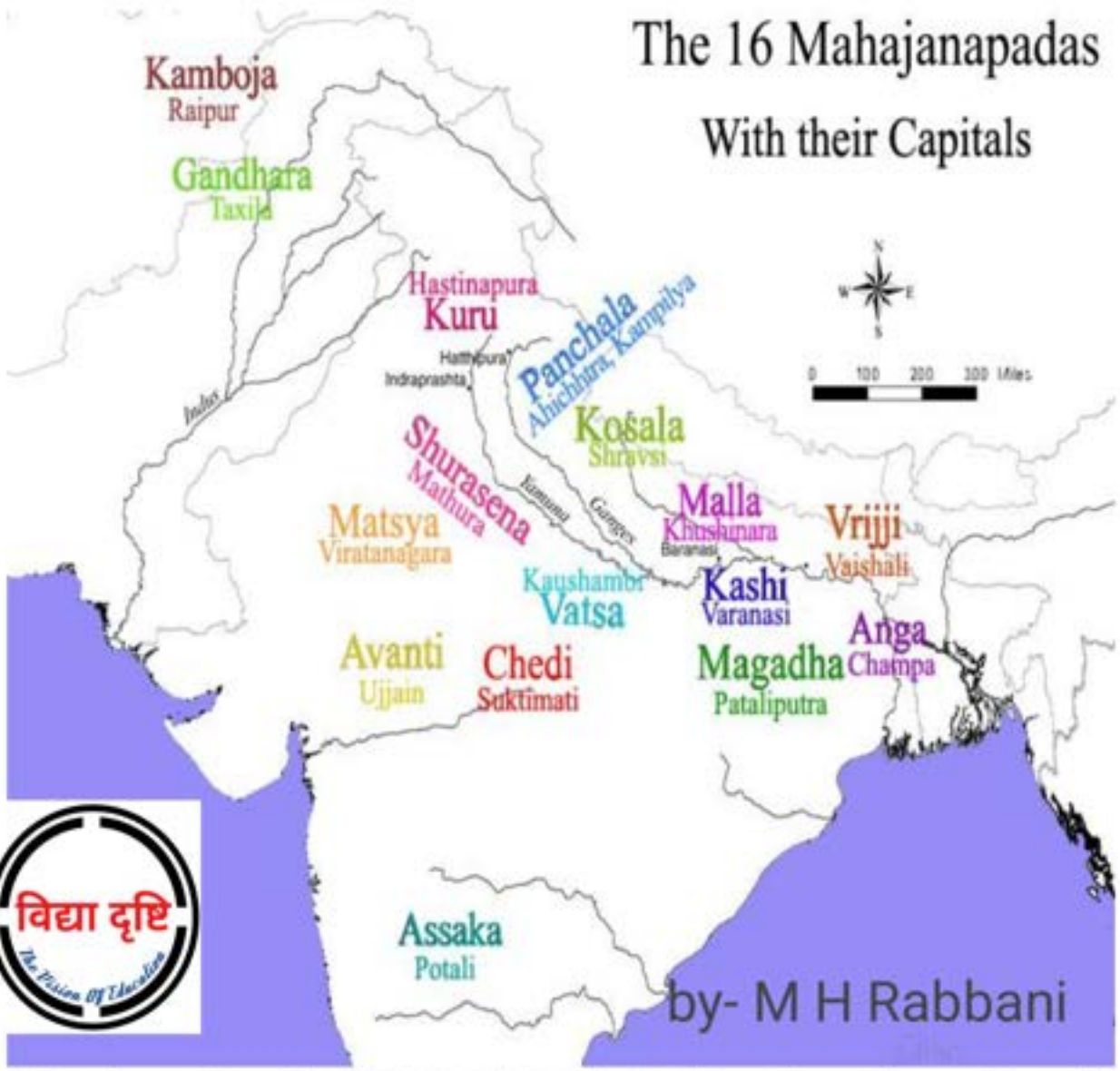

The 16 Mahajanapadas
With their Capitals
Kamboja
Raipur
Gandhara
Taxila
Hastinapura
Kuru
Panchala
Ahichhatra, Kampilya
Hathipura
Indraprashta
Indus
Kosala
Shravsi
Shurasena
Mathura
Jamuna
Ganges
Malla
Khushinara
Vrijji
Vaishali
Matsya
Viratanagara
Baranasi
Kaushambi
Vatsa
Kashi
Varanasi
Anga
Champa
Avanti
Ujjain
Chedi
Suktimati
Magadha
Pataliputra
Assaka
Potali
विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
by- M H Rabbani


महाजनपद और नगर
Tropic of Cancer
① वज्जि ② मगध ③ कोशल
④ कुरु ⑤ पांचाल ⑥ गांधार
⑦ अवंति ⑧ राजगीर ⑨ उज्जैन
⑩ तक्षशिला ⑪ वाराणसी
SCALE

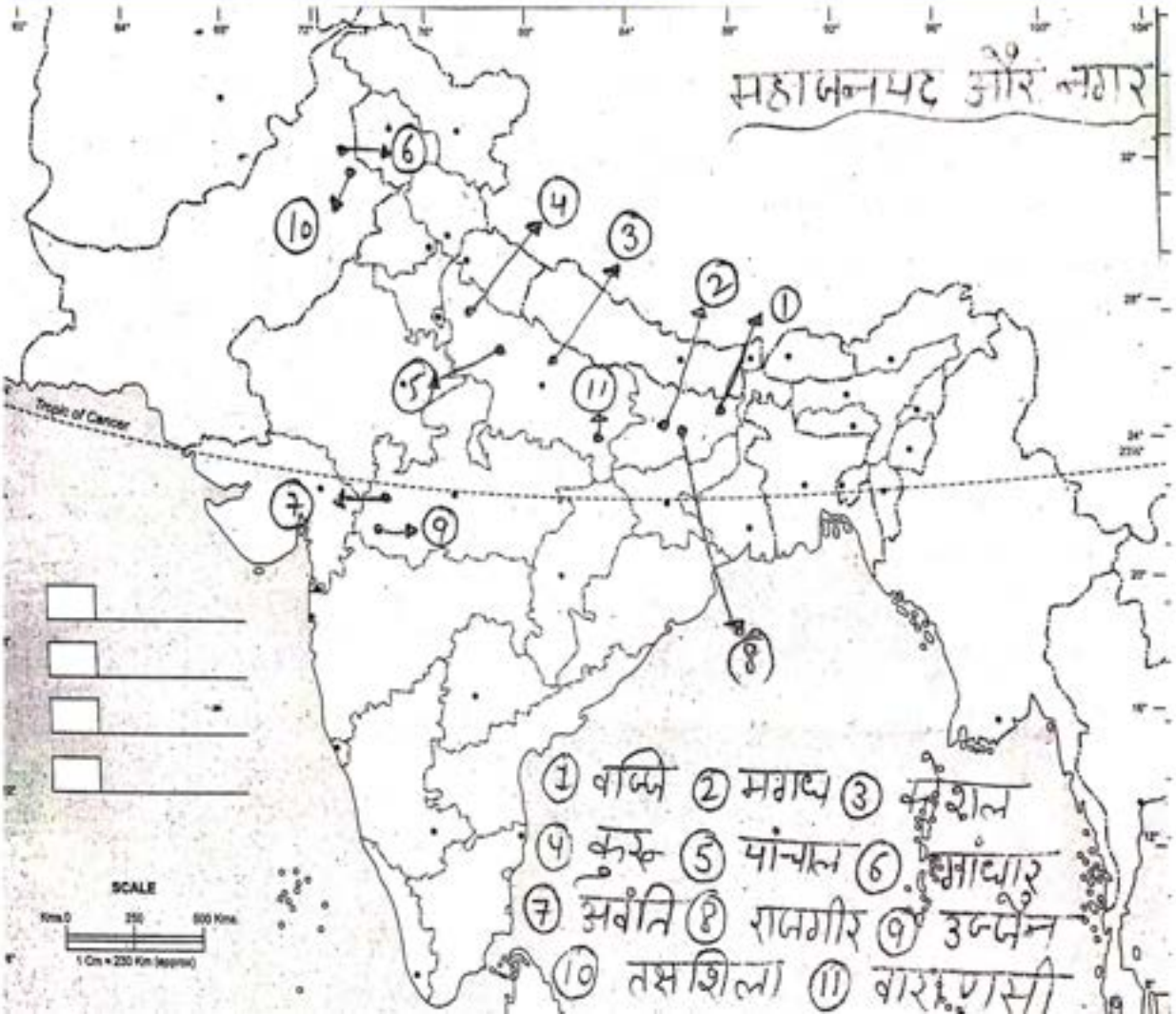

मानचित्र 2
असोक के अभिलेखों का वितरण

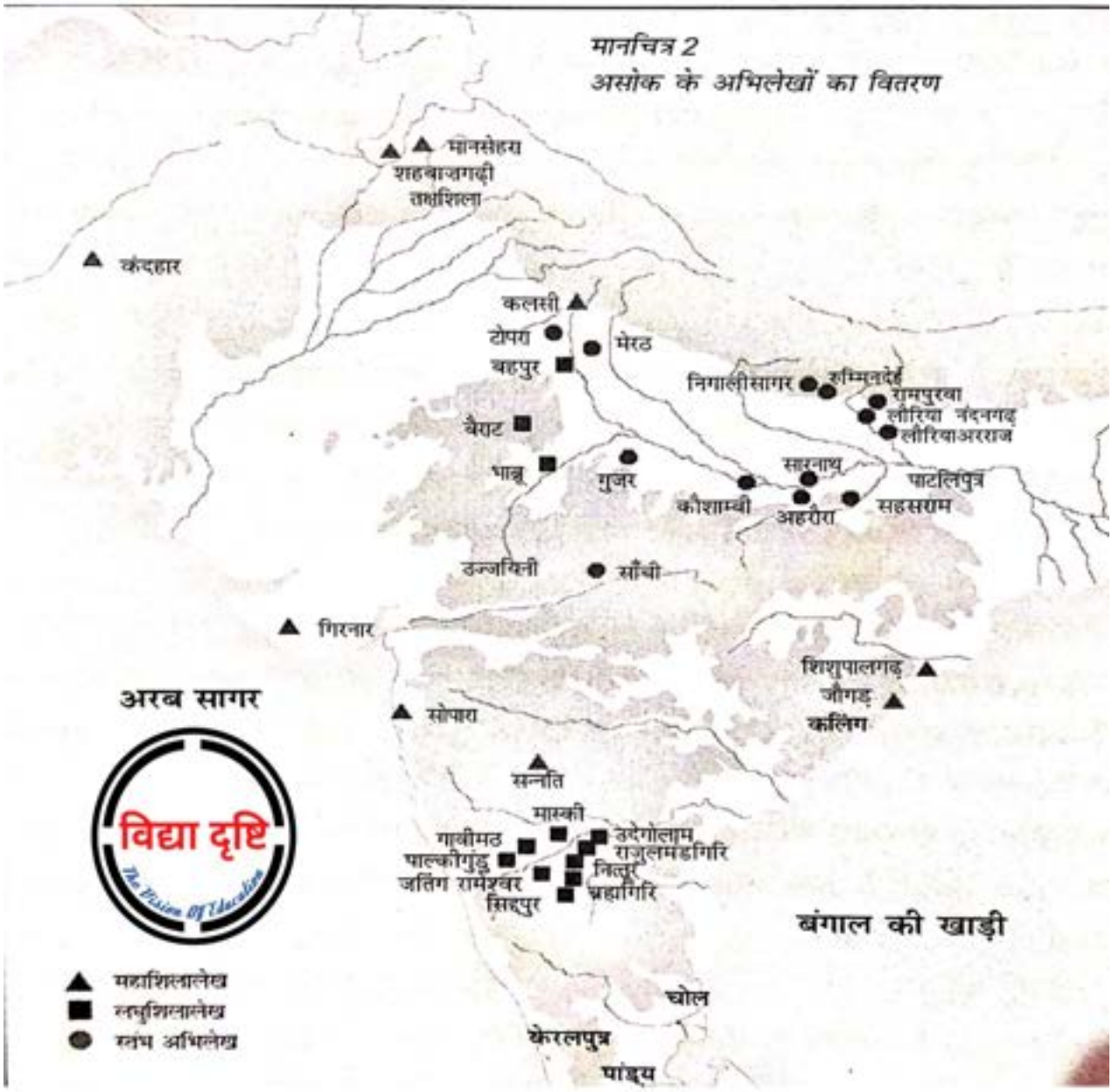


विद्या दृष्टि
The Vision Of Education

by- M H Rabbani

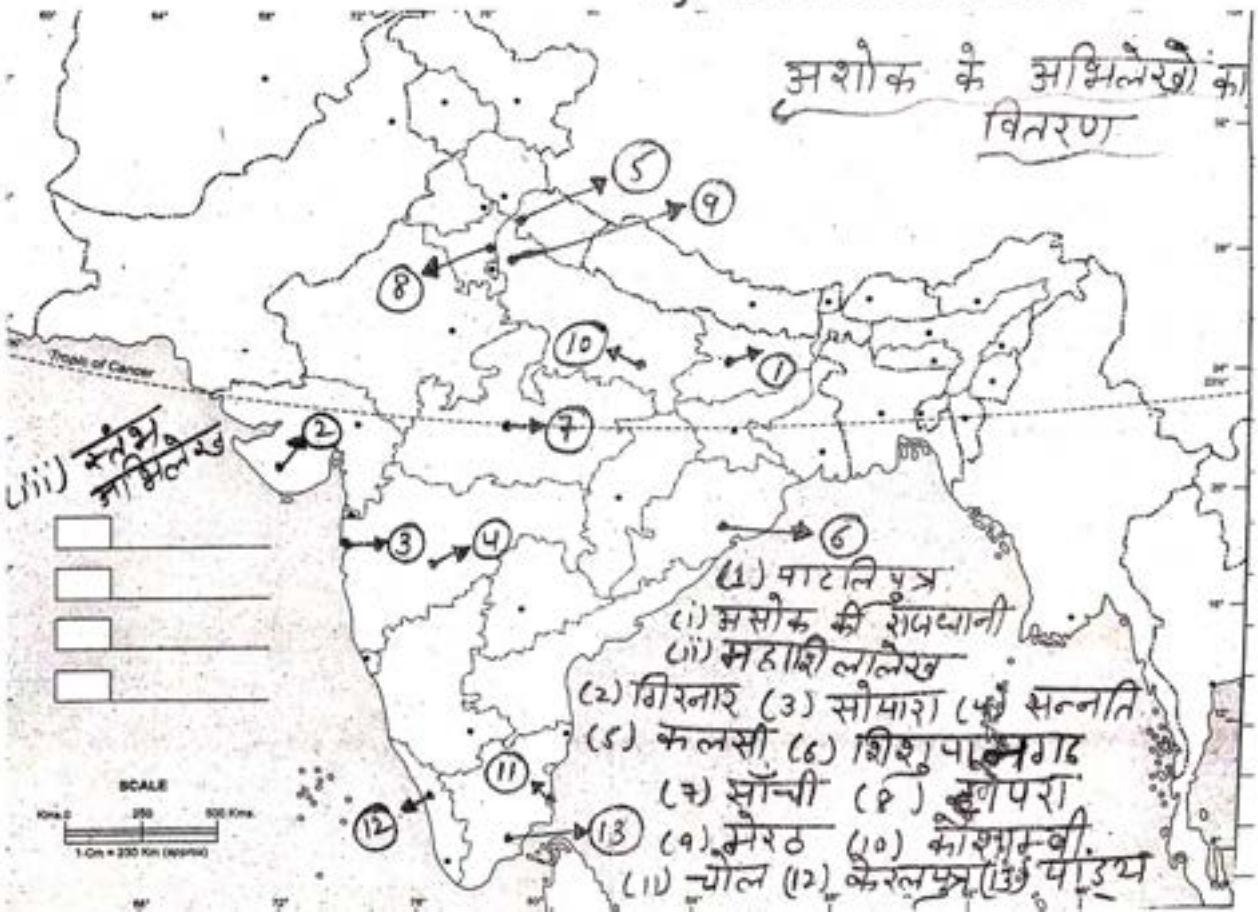

मानचित्र 1

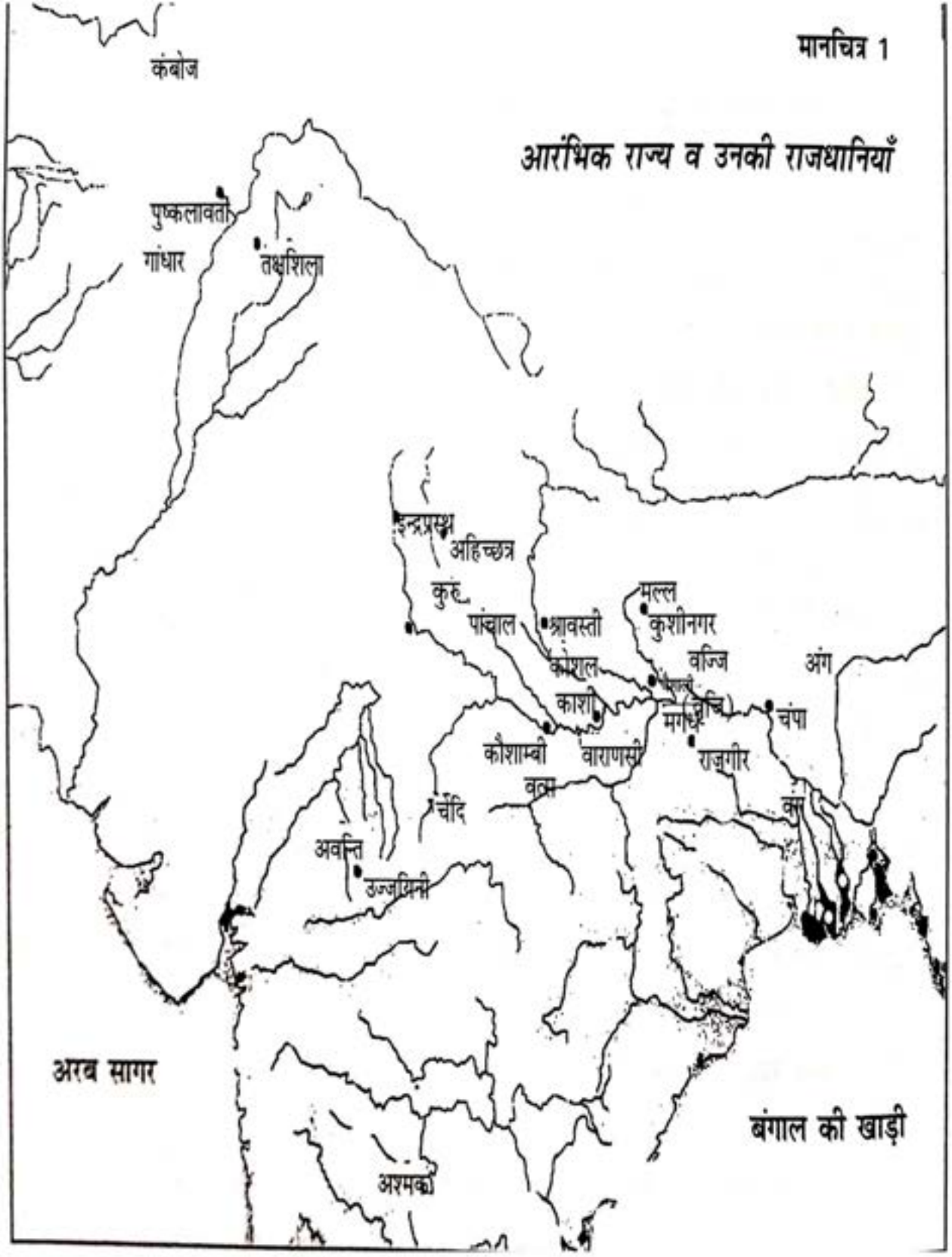


विद्या दृष्टि
The Vision Of Education
by- M H Rabbani